BAOU Education for All
NAAC A++
॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

हिंदी सिनेमा की भाषिक समृद्धि और गायब होती हिंदी

वीनू

पीएचडी शोधार्थी

हिंदी अध्ययन केंद्र

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात

इमेल – veenu3420@gmail.com

शोध सार –

हिंदी सिनेमा जगत में जहाँ सत्तर और अस्सी के दशक में विशुद्ध रूप से हिंदी का व्यवहार न केवल परदे के सामने होता था बल्कि परदे के पीछे निर्माता, निर्देशक से लेकर पटकथा तक हिंदी में लिखी और पढ़ी जाती थी । किन्तु वर्तमान समय की यदि बात की जाए तो आज की विडंबना यह है कि फिल्म के निर्माण की नींव रखे जाने से लेकर अंतिम दृश्य तक के कार्यक्रम का लेखा-जोखा अंग्रेजी भाषा में किया जाता है । इस सम्बन्ध में अपने अनुभव साझा करते हुए हिंदी सिनेमा के एक प्रसिद्ध और मंझे हुए कलाकार नवजुद्दीन सिद्दकी कहते हैं कि **"आप हिंदी में फिल्म बना रहे हो लेकिन डायरेक्टर भी, असिस्टेंट भी, सारे इंग्लिश में बात कर रहे हैं और एक्टर की समझ में ही नहीं आ रहा..."**[2] यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंदी सिनेमा के माध्यम से रोजगार पाने वाले अभिनेता, अभनेत्री, निर्माता, निर्देशक आदि फिल्म के दौरान बोले जाने वाले संवादों के अतिरिक्त हिंदी का उपयोग करना भी आवश्यक नहीं समझते । यही नहीं हिंदी सिनेमा जगत द्वारा आयोजित किये जाने वाले सम्मान समारोह में भी अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की कमजोर इंग्लिश का जहाँ मज़ाक उड़ा कर सुर्खियाँ बटोरने का चलन चल पड़ा है वहीं हिंदी में साक्षात्कार देने पर ऐसे व्यक्ति के समंध में आम धारणा बना ली जाती है कि वह अंग्रेजी भाषा बोलने में अक्षम है, इसे सामाजिक दबाव के माध्यम से शर्म का विषय बना दिया जाता है । यह कैसी विडंबना है ? यह प्रश्न ही क्यों उठता है हिंदी भाषा के उपयोग पर? इसके पीछे के कारणों को यदि खंगाला जाए तो मैकाले द्वारा भारत भ्रमण के पश्चात कहे गए वे शब्द सहज ही याद आ जाते हैं जिनका मूल स्वर हिंदी भाषा के प्रति जनमानस में हीनता बोध और अंग्रेजी की श्रेष्ठता, स्तर की उच्चता के अनुभव हेतु अंग्रेजी ज्ञान की अनिवार्यता के माध्यम से भारत की जड़ों को हिलाने और इस देश पर राज कर सकने के एक मात्र उपाय जैसा सुझाव ब्रिटिश सरकार को दिया गया था ।

बीज शब्द – दुर्भाग्यपूर्ण, साक्षात्कार, उच्चता, अनुभव, श्रेष्ठता

भूमिका –

हिंदी भाषा भारत की भाषा है । जिसे 14 सितम्बर, 1949 को आजाद भारत की संविधान सभा द्वारा राजभाषा घोषित किया । हिंदी स्वाधीनता की भाषा होने के साथ ही विशाल गौरवशाली इतिहास की

भावाभिव्यक्ति बनकर सम्पूर्ण भारतीय विरासत को साथ लेकर लम्बी अवधि से प्रवाहमान है । रंगमंच की भाषा के रूप में इसने हमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, मोहन राकेश, भीष्म साहनी और स्वदेश दीपक के लोकप्रिय और ख्याति प्राप्त नाटक कोर्टमार्शल, जलता हुआ रथ, काल कोठरी, सबसे उदास कविता जैसे अप्रतिम नाट्यकृतियाँ दी हैं। हिंदी, भारत की संपर्क भाषा तो है ही साथ ही संविधान की आठवी अनुसूची के अनुच्छेद 343 से 351 के मध्य राजभाषा की व्याख्या की गई है । इसी के साथ सन् 1968 में राजभाषा विभाग द्वारा आम जन के लिए राजभाषा संकल्प जारी किया गया । यह संकल्प संसद के दोनों सदनों में पारित हुआ जिसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं में से कुछ इस प्रकार हैं –

"1. संविधान के अनिच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है :
यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और इसे कार्यान्वित किया जाएगा और किये जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी ।
2. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषाओँ का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किये जाने चाहिए :
यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और अधिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।"[1]

भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को 22 भाषाओँ की सूची में शामिल किया गया गया है और वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा इस प्रावधान को प्रतिबद्धतापूर्वक लागू करने के प्रयास किये जा रहे हैं कि सरकारी, अर्द्धसरकारी और निजी संस्थानों आदि में परिपत्रक न केवल अंग्रेजी भाषा में निकले बल्कि अनिवार्य रूप से हिंदी भाषा में भी परिपत्रकों को जारी किया जाए ।

हिंदी सिनेमा की बात की जाए तो विश्वभर में हिंदी फिल्म जगत या कहें कि हिंदी सिनेमा जगत को बोलीवुड के नाम से जाना जाता है । इतिहास के साक्ष्यों अनुसार हिंदी साहित्य और सिनेमा अंतर्संबंधित रहे हैं । जहाँ हिंदी लेखकों की कालजयी कहानियों, उपन्यासों, नाटकों पर फ़िल्में और धारावाहिकों का निर्माण किया गया । उदहारण के लिए प्रेमचंद की कृतियों पर गबन, नवजीवन, सद्गति, गोदान और सेवासदन जैसी फिल्मों का निर्माण हुआ । इसी प्रकार दो बीघा जमीन, तमस, पति पत्नी और वो, सूरज का सातवाँ घोड़ा, उसने कहा था, तीसरी कसम और अनवर आदि । इन सभी फिल्मों की भाषा हिंदी और हिंदी के प्रादेशिक एवं निकटवर्ती रूप रहे हैं । हिंदी में लिखा गया साहित्य और फ़िल्में जन की संवेदनाओं से जुड़ने का सशक्त माध्यम रहे हैं । एक समय ऐसा था जब आजादी की लड़ाई लड़ रहे भारतभर के वीरों में ओज की लहर उत्पन्न करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झांसी की रानी' लगभग हर स्वतंत्रता सेनानी के कंठ पर विराजमान थी । यह व्ही हिंदी है जो हिन्द का गौरव बनकर उसके मस्तक के तिलक के रूप में सुशोभित रही है । पचास से

लेकर साठ के दशक तक परिनिष्ठित हिंदी व्यक्ति के सामाजिक स्तर की द्योत्तक थी । किन्तु उसके बाद के समय में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की श्रेष्ठता के लुभावन, अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों बहुतायत आगमन, अंग्रेजी भाषा के प्रति भारतीय जन की आसक्ति हेतु गढ़े गए प्रपंचों के परिणामस्वरूप हिंदी की अपेक्षा अंग्रजी रीति-रिवाज और परम्पराओं का ही हिंदुस्तानीकरण नहीं हुआ वरन् भाषा के स्तर पर भी बड़े बदलाव हुए । धीरे-धीरे हिंदी का स्थान अंग्रेजी ने लिए । कोंवेन्ट और निजी विद्यालयों के खुलने और अंग्रेजी माध्यमों में सभी विषयों के अध्ययन की अनिवार्यता के हिंदी के चलन की परम्परा को सबसे बड़ा आघात लगाया ।

हिंदी सिनेमा जगत में जहाँ सत्तर और अस्सी के दशक में विशुद्ध रूप से हिंदी का व्यवहार न केवल परदे के सामने होता था बल्कि परदे के पीछे निर्माता, निर्देशक से लेकर पटकथा तक हिंदी में लिखी और पढ़ी जाती थी । किन्तु वर्तमान समय की यदि बात की जाए तो आज की विडंबना यह है कि फिल्म के निर्माण की नींव रखे जाने से लेकर अंतिम दृश्य तक के कार्यक्रम का लेखा-जोखा अंग्रेजी भाषा में किया जाता है । इस सम्बन्ध में अपने अनुभव साझा करते हुए हिंदी सिनेमा के एक प्रसिद्ध और मंझे हुए कलाकार नवजुद्दीन सिद्दकी कहते हैं कि **"आप हिंदी में फिल्म बना रहे हो लेकिन डायरेक्टर भी, असिस्टेंट भी, सारे इंग्लिश में बात कर रहे हैं और एक्टर की समझ में ही नहीं आ रहा..."**[2] यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंदी सिनेमा के माध्यम से रोजगार पाने वाले अभिनेता, अभनेत्री, निर्माता, निर्देशक आदि फिल्म के दौरान बोले जाने वाले संवादों के अतिरिक्त हिंदी का उपयोग करना भी आवश्यक नहीं समझते । यही नहीं हिंदी सिनेमा जगत द्वारा आयोजित किये जाने वाले सम्मान समारोह में भी अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की कमजोर इंग्लिश का जहाँ मज़ाक उड़ा कर सुर्खियाँ बटोरने का चलन चल पड़ा है वहीं हिंदी में साक्षात्कार देने पर ऐसे व्यक्ति के समंध में आम धारणा बना ली जाती है कि वह अंग्रेजी भाषा बोलने में अक्षम है, इसे सामाजिक दबाव के माध्यम से शर्म का विषय बना दिया जाता है । यह कैसी विडंबना है ? यह प्रश्न ही क्यों उठता है हिंदी भाषा के उपयोग पर? इसके पीछे के कारणों को यदि खंगाला जाए तो मैकाले द्वारा भारत भ्रमण के पश्चात कहे गए वे शब्द सहज ही याद आ जाते हैं जिनका मूल स्वर हिंदी भाषा के प्रति जनमानस में हीनता बोध और अंग्रेजी की श्रेष्ठता, स्तर की उच्चता के अनुभव हेतु अंग्रेजी ज्ञान की अनिवार्यता के माध्यम से भारत की जड़ों को हिलाने और इस देश पर राज कर सकने के एक मात्र उपाय जैसा सुझाव ब्रिटिश सरकार को दिया गया था । इस सम्बन्ध में गांधीजी द्वारा हिंदी की महत्ता और भारत की एकता व अखंडता के लिए हिंदी की आवश्यकता के सम्बन्ध में दिए गए वक्तव्य पर बात करते हुए साहित्यकार बलवंत जी लिखते हैं कि **-"सन् 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में गाँधीजी ने हिंदी में भाषण देते हुए स्पष्ट घोषणा कर दी थी-'हिंदी का प्रश्न मेरे लिए स्वराज के प्रश्न से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है ।' एक भाषा एक लिपि विषयक इसी अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि हिंदी भाषा और देवनागरी का प्रचार-प्रसार देश हित एवं राष्ट्रीय एकता की स्थापना हेतु होना चाहिए ।"**[3] गांधीजी ब्रिटिश सरकार की नीतियों के प्रति सचेत थे, वे जानते थे कि भारतियों में फूट डालने की शुरुआत भाषाई स्तर पर आकर आम जनता की भावनाओं की अभिव्यक्ति की साधन हिंदी पर प्रहार करने से ही हो सकती है । अत: गांधीजी ने गुजराती भाषी होते हुए जनसंपर्क की भाषा हिंदी को वरीयता देते हुए देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में अपना समर्थन दिया ।

हास्य कलाकार और अभिनेता कपिल शर्मा अक्सर हिंदी भाषा के महत्व पर अपने धारावाहिक और साक्षात्कारों में बात करते हैं । उनके साथ अधिकांशत: यह भी हुआ है कि लोगों द्वारा उन्हें तब उपहास का पात्र बनाया गया जब उनके अंग्रेजी के अल्प ज्ञान की चर्चा की गई । किन्तु हर बार की तरह वे हिंदी के समर्थक के रूप में उभरते हैं । न्यूज़ 18 को दिए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि - **"बन्दे अपने जैसे ही होते हैं सारे पूरी**

दुनिया में ये तो बस ऐसे ही लैंग्वेज जो है इसने ही बना दिया है कुछ । वो तो गोरे हम पर राज कर गए तो उनकी इंग्लिश जो है इंटरनेशनल हो गई नहीं तो हम लोगों ने राज किया होता पूरी दुनिया पर तो हो सकता है ट्रम्प भी आज हिंदी बोल रहे होते ।"[4] हिंदी के गौरवशाली इतिहास के जानकार और अपनी भाषा के प्रति प्रतिबद्धता के कारण ही कपिल शर्मा हिंदी को शर्म का विषय नहीं वरन् गर्व का विषय मानते हैं । किन्तु उन्हीं के धारावाहिक में आमंत्रित हिंदी अभिनेता और अभिनेत्रियाँ अंग्रेजी भाषा का उपयोग अधिक करते दिखाई देते हैं ।

अभिनेता मनोज वाजपेयी हिंदी सिनेमा जगत में अंग्रेजी के बढ़ते दखल को ही जिम्मेदार नहीं मानते बल्कि वे समाज की महती भूमिका और हिंदी के चलन की जड़ों को कमजोर किये जाने के प्रयासों पर खेद प्रकट करते हुए कहते हैं कि – **"हिंदी के साइडलाइन होने में केवल एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री ही जिम्मेदार नहीं है, बल्कि हमारा समाज भी जिम्मेदार है । मुझे लगता है सभी अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं । हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा जल्दी इंग्लिश बोलना सीख जाए, इसके बाद अगर उसके पास समय हो तो वो दूसरी भाषा सीखे । माता-पिता के तौर पर यह हमारी गलती है । हम शिक्षक के तौर पर भी फेल हो रहे हैं, क्योंकि हम अपनी भाषा का महत्त्व नहीं जानते हैं न ही अपने बच्चों को सिखा पाते हैं ।"**[5] हिंदी सिनेमा जगत में हिंदी के चलन में आई कमी और अंग्रेजी भाषा के बढ़ते हस्तक्षेप के सम्बन्ध में अभिनेता मनोज वाजपेयी वर्तमान समाज को जिम्मेदार मानते हैं । यह सही भी है कि आज के समय में परिस्थितियों का गठन कुछ इस प्रकार से किया जा रहा है कि विद्यालयों में बालकों की प्राथमिक शिक्षा उनकी मात्रभाषा की अपेक्षा अंग्रेजी में दी जा रही है । कुछ मामले तो ऐसे भी सामने आ रहे हैं जहाँ निजी विद्यालयों द्वारा बालक के माता-पिता के अंग्रेजी ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता की शर्त और बालक के समक्ष हर समय अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप करने की शर्त पर भी विद्यालयी प्रवेश दिया जाता है । जब बालक की नींव ही पराई भाषा से सींची जाएगी तो अपनी भाषा, संस्कृति और सभ्यता के प्रति मोह, लगाव, प्रेम कैसे उपजेगा?

वर्तमान समय में ओटीटी एवं अन्य माध्यमों पर आ रही फिल्मों, वेब सीरीज, गीतों की भाषा में टूटी-फूटी हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का जिस तरह से प्रयोग किया जा रहा है, वह दिन दूर नहीं जब हिन्दियो सिनेमा जगत से हिंदी की संस्कृति अपना अस्तित्व धूमिल होते देखेगी । इस सम्बन्ध में सचेत और हिंदी प्रेमी लोगों द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं । हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और अपनी जड़ों से जुड़े रहने के प्रयास के तौर मनोज जी लिखते हैं कि – **"इंडस्ट्री में जो भी नए लोग आ रहे हैं, उनमें से 90-95 प्रतिशत लोग केवल इंग्लिश भाषा में लिखते हैं । यह बेहद दुःख की बात है कि इंडस्ट्री में इंग्लिश का इन्फ्लुएंस बढ़ता जा रहा है । हालांकि मैं केवल उन्हीं फिल्मों की स्क्रिप्ट पढता हूँ, जो देवनागरी में लिखी हों ।"**[6] हिंदी सिनेमा जगत के लिए यह बड़ी चिंता का विषय ही कि वर्तमान समय के सिनेमा में काम करने वाले ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ रही है जो हिंदी के स्थान पर पटकथा भी अंग्रेजी भाषा में लिखना अधिक सुलभ समझते हैं ।

अभिनेता मनोज वाजपेयी सराहना के पात्र हैं कि अंग्रेजी के बढ़ते हस्तक्षेप के बावजूद भी वे केवल उन कहानियों को ही पढ़ते हैं जो देवनागरी लिपि में लिखी गई होती हैं । उनके द्वारा कहे गए इस पूरे वक्तव्य में जहाँ-तहाँ अंग्रेजी अपनी मौजूदगी दर्ज कराती दिखाई देती है । निश्चय ही अंग्रेजी भाषा का प्रभाव हिंदी भाषी जनमानस के साथ-साथ सिनेमा की दुनिया पर भी गहराई से पड़ा है । हिंदी सिनेमा जगत में देवनागरी लिपि की आवश्यकता के सम्बन्ध में बात करते हुए वे कहते हैं कि **"आज के दौर में बहुत कम एक्टर ऐसे हैं, जो देवनागरी स्क्रिप्ट की डिमांड करते हैं । लेकिन मैं किसी अन्य भाषा में फिल्म की कहानी नहीं पढ़ता हूँ । अगर कोई स्क्रिप्ट अंग्रेजी में होती है, तो मैं उसे वापस लौटा देता हूँ । ऐसा नहीं है कि मुझे इंग्लिश नहीं आती है,**

बल्कि एक आर्टिस्ट के तौर पर हमें हिंदी में ही खुद को एक्सप्रेस करना चाहिए । ऐसा करने से हमें भाषा को लिखने-पढ़ने और बोलने की समझ और बेहतर होगी ।"[7] अभिनेता का यह कहना कि वे किसी अन्य भाषा में लिखी गई फिल्म की पटकथा को नहीं पढ़ते हैं और केवल देवनागरी लिपि में लिखी गई कहानी को ही पढ़ते हैं, इससे उनके हिंदी के प्रति आदर और समर्पण को समझा जा सकता है । हिंदी के प्रति यही गंभीरता और प्रतिबद्धता यही प्रत्येक मनुष्य के भीतर हो तो हिंदी पुन: अपना खोया हुआ सम्मान पा सकती है ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अंतरजाल की दुनिया में और वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव ने करोड़ों की आबादी वाले भारत की अपनी भाषा के अस्तित्व के लिए यह एक संकट का संकेत है । जहाँ हिंदी सिनेमा से हिंदी ही गायब होती जा रही है । गीत-संगीत मनुष्यों की संवेदनाओं को न केवल अभिव्यक्त करते हैं बल्कि एक-दूसरे से जोड़ते भी हैं । आजकल बन रही फिल्मों के गीतों के बोल भी हिंदी या भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी भाषा के शब्दों से लबरेज़ दिखाई देते हैं । वर्तमान हिंदी सिनेमा जगत की यह तस्वीर बदलनी चाहिए । तभी हिंदी अपना अस्तित्व बचाए रख सकती है ।

सन्दर्भ सूची

1. https://rajbhasha.gov.in/hi/OL_resolution_1968
2. अमर उजाला, मुंबई को दिया गया साक्षात्कार https://hindi.oneindia.com/news/entertainment/nawazuddin-siddiqui-said-bollywood-does-not-give-importance-to-hindi-making-films-in-hindi-and-676612.html
3. **बलवंत, अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त हों-लेख, सोच-विचार (साहित्यिक पारिवारिक मासिकी)-पत्रिका, अंक-3, सितम्बर 2020, पृष्ठ-12**
4. https://youtu.be/7imgoqxe_34
5. https://www.bhaskar.com/entertainment/bollywood/news/actor-manoj-bajpayees-reaction-to-the-language-said-he-reads-only-devnagari-script-130378606.html
6. https://www.bhaskar.com/entertainment/bollywood/news/actor-manoj-bajpayees-reaction-to-the-language-said-he-reads-only-devnagari-script-130378606.html
7. https://www.bhaskar.com/entertainment/bollywood/news/actor-manoj-bajpayees-reaction-to-the-language-said-he-reads-only-devnagari-script-130378606.html